International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 1794-1796

आधुनिक सन्दर्भ में श्रीमद्रामगीता में वर्णित राजनीति की प्रासंगिकता

Dr. Seema Saini[1]

[1] Research Scholar, Department of Sanskrit, University of Rajasthan, Jaipur, Rajasthan, India

सारांश

असीम संवेदनाओं की वह अभिव्यक्ति ही साहित्य है, जिसमें रचनाकार शब्द और अर्थ की तूलिका से अपने मानस पटल पर स्थित संवेदनाओं के चित्र उकेरता है और जब वह उसे समाज के हाथों में सौपता है तब वह अपने आप को कृतकृत्य मानता है। ऐसे ही मनस्वी हैं आधुनिक संस्कृत विद्वान् डॉ. गौतम जिन्होंने इन आठ सौ श्लोकों का अनुशीलन अपनी दृष्टि से किया और उसे नाम दिया है श्रीमद्रामगीता। उक्त ग्रन्थ में आठ सौ श्लोक हैं जो अठ्ठारह अध्यायों में विभक्त हैं। रचनाकार द्वारा इन श्लोकों का संकलन बड़ी ही कुशलता के साथ किया गया है। अपनी सूक्ष्मदृष्टि से उन यथार्थों का चिन्तन डॉ. गौतम ने किया है जो लोकहित में अत्यन्त ही उपादेय हैं। प्रस्तुत शोध आलेख में श्रीमद्रामगीता का राजनैतिक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

मूल शब्द : असीम संवेदनाओं, श्रीमद्रामगीता, राजनैतिक अध्ययन।

प्रस्तावना

राजनीति शब्द दो पदों से मिलकर बना है। प्रथम है राज और द्वितीय है नीति। राज का तात्पर्य है शासन और नीति का तात्पर्य आगे बढ़ाने वाले सदुपदेश। दोनों पदों को आपस में मिला देनें पर शब्द बनता है राजनीति। जिसका कि उपयोग प्रायः समाज को गति प्रदान करने के अर्थ में किया जाता है। राजतन्त्र हो अथवा प्रजातन्त्र नीतियाँ तो दोनों ही तन्त्रों में अपनाई जाती हैं। क्योंकि उसके विना समाज का संचालन ही असम्भव है। किसी भी समाज या देश में जैसी नीतियों का निर्धारण और अनुपालन किया जाता है उस समाज की प्रगति भी उसी के अनुसार दृष्टिगोचर होती है। उन्नति का मूल नीतियों का निर्धारण ही है। आज हम सभी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के सपनों को साकार रूप प्रदान करने की बातें करते हैं। उसके लिए आवश्यक है राम के विषय में जानना। राम ने अपने राजकीय जीवन में प्रजा के प्रति किन नीतियों को अपनाया कि आज भी उनके द्वारा चलाये गये शासन को हजारों शताब्दियों के बाद भी याद किया जाता है और उसकी दुहाई लगाई जाती है।

आज समाज ने पर्याप्त भौतिक उन्नति कर ली है तथापि चारों ओर अराजकता का वातावरण बना हुआ दिखाई देता है। जिसका कारण कहीं न कहीं नीति निर्धारण की कमी ही कही जायेगी। आज के इस आधुनिक समाज में भी यदि शान्ति की स्थापना करनी है तो राम के द्वारा दी गई शिक्षाओं को अपनाना होगा। जिसके लिए आधुनिक संस्कृत मर्मज्ञ एवं मनीषी डा.सूर्यनारायण गौतम ने 'श्रीमद्रामगीता' नामक ग्रन्थ के रूप में कल्पित किया है। यह ग्रन्थ महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण आदिकाव्य से उद्धृत है तथा उपनिषद् स्वरूप है। प्रस्तुत शोध–आलेख में श्रीराम के मुखारविन्द से निःश्रृत उपदेश को जो राजनीति परक है किस प्रकार प्रासांगिक हैं प्रस्तुत किया जा रहा है।

जिस समय भरत श्रीराम को अयोध्या में चलकर राज्यभार सम्भालने के लिए प्रार्थना करने के लिए चित्रकूट में उपस्थित होते हैं उस समय श्रीराम भरत से अनेक प्रश्न करते हैं। यथा– सबसे पहले श्रीराम ने भरत से पूछा कि हे भरत ! पिता ने आपको राजा का दायित्व प्रदान किया है। आप अब अयोध्या के राजा हैं अतः राजा का परम कर्तव्य है कि वह सदा ही बुद्धिजीवियों का ध्यान रखे। तुम उन महातेजस्वी, धर्मरत, विद्वान् ब्राह्मण ऋषि वशिष्ठ की सदा पूजा तो करते हो ? जो इक्ष्वाकुवंशी राजाओं का सनातन मान्य आचार्य है।[1] हे तात ! क्या तुमने अपने ही समान शूर, शास्त्रों के ज्ञाता, कुलीन तथा बाह्य चेष्टाओं (बाहर के व्यवहार) को देखकर ही मन की बात समझ लेनें वाले सुयोग्य जनों को ही मन्त्री बनाया है?[2]

क्योंकि, हे राघव ! उत्तम मन्त्रणा हीं राजा की विजय का मूलकारण होती है। वह मन्त्रणा भी तभी सफल होती है जब मन्त्रीगण उसे सर्वथा गुप्त ही रखते हैं और उचित समय आनेपर ही प्रकट करते हैं।[3] राजनीति में सबसे अहम बात है नीति निर्धारण के पश्चात् अमल होने तक उसे पूर्ण रूपेण गोपनीय रखना।

तुम किसी मन्त्रणा पर स्वयं अकेले ही अथवा बहुत से जनों के बीच में मन्त्रणा तो नहीं करते ? कहीं तुम्हारी की गई मन्त्रणा फैल तो नहीं जाती है।[4]

भरत ! तुम्हारे सब कार्यों की पूर्णता पर अथवा पूर्णता के समीप आ जाने पर हीं लोगों को ज्ञात होता हैं अथवा नहीं ? कहीं तुम्हारे द्वारा सोचे गये कार्यों को अन्य राजागण गुप्तचरों के द्वारा पहले हीं तो नहीं ज्ञात कर लेते हैं। तात ! तुम्हारे निश्चय को तुम्हारे तथा मन्त्रियों के द्वारा न प्रकट करने पर भी अन्य सामान्य जन ज्ञात तो नहीं कर लेते हैं ? अर्थात् तुम्हारी सोची हुई बात सर्व साधारण को तो ज्ञात नही हो जाती है।[5]

श्रीराम प्रजा रक्षण में सदैव तत्पर रहने वाले नरेश हैं किन्तु राजकीय कार्यों में वे केवल सुयोग्यों को ही नियुक्त करने के पक्षधर हैं। वे भरत से प्रश्न करते हैं कि–

क्या तुम हजारों मूर्खों के स्थान पर एक हीं पण्डित को रखना उचित समझते हो ? क्योंकि संकट के अवसर पर पण्डित हीं अनर्थ से बचाकर कल्याण कर सकता है। (हजारों मूर्ख नहीं)[6]

किसी भी राजा का एक हीं मन्त्री यदि मेधावी, शूर, कुशल तथा नीतिनिपुण है तो वह राजा अथवा राजकुमार को बहुत वड़ी सम्पदा प्राप्त करा सकता है।[7] राम भरत से पुनः प्रश्न करते हैं– निश्छल हृदय तथा जो उत्कोच (घूस) नहीं लेते हैं, जो कुलीन हैं ऐसे अमात्यों को ही श्रेष्ठ कार्यों में नियुक्त तो करते हो न ? क्योंकि

घूसखोर लोग कभी भी श्रेष्ठ और सत्य निर्णय नहीं कर सकते हैं।[8]
क्या तुमने सदा निर्भय रहनेवाला, पराक्रमी, विपत्ति के अवसरों में धैर्यधारण करने वाला, बुद्धिमान्, पवित्र ह्रदय और कुलीन तथा राजा से प्रेम करने वाला, युद्धकला प्रवीण व्यक्ति को सेनापति नियुक्त किया है।[9] तुम्हारे प्रमुख योद्धा (सेनानायक) बलवान्, युद्धकला को भलीभाँति जाननेवाले और पराक्रमी तो है न ? तुमने क्या उनके शौर्यादि की परीक्षा करली है ? (श्रीराम के अनुसार योद्धाओं के शौर्य की परीक्षा अवश्य करनी चाहिए तथा सेवाकाल में निरन्तर करते रहनी चाहिए) क्या तुम उनका सत्कार करते हो ?[10] (सेना के सत्कार्य का तात्पर्य उनको उचित सुविधाओं का आवश्यक रू' से उपलब्ध कराना है) श्रीराम भरत से पुनः प्रश्न करते हुए कहते है–
क्या तुमने शत्रुपक्ष के अठारह और अपने पक्ष के पन्द्रह तीर्थों (पवित्र संस्थाओं जैसे राजा, पुरोहित युवराज, मन्त्री, सेनापति आदि) की तीन–तीन अज्ञात गुप्तचरों के माध्यम से सदा उनका परीक्षण करते रहते हो ?[11]
राम ने राजा के कर्त्तव्यों का उपदेश करते हुए यह भी कहा कि यदि किसी भी कारणवश अपने राज्य को कोई भी व्यक्ति निर्वासित होने के बाद अपने राज्य में आना चाहे तो उसकी राज्य भक्ति की परीक्षा करने के पश्चात् उसका पूर्णतः सम्मान प्रदान करना चाहिए। यथा– शत्रुनाशक ! जिन शत्रुओं को तुमने पहले राज्य से बहिष्कृत कर दिया है उनके पुनः लौटकर आने पर उन्हें दुर्बल समझकर उनकी उपेक्षा तो नहीं करते हो ?[12]
समाज विविधताओं का आगार है। उसमें आस्तिक–नास्तिक, अच्छे–बुरे, गुणी–अवगुणी सभी प्रकार के लोग रहते हैं। उनमें जो निकृष्ट प्रकृति के जन होते हैं वे अपने निजी और तुच्छ स्वार्थो के लिए भी राजकीय कार्यों में बड़ी बाधा पहुचाने में नहीं हिचकते। राम भरत को सचेत करने के लिए कहते हैं–
तात ! तुम कभी नास्तिक ब्राह्मणों का संग तो नहीं करते ? क्योंकि वे बुद्धि को परमार्थ से विचलित कर स्वार्थ परायण करने में कुशल होते हैं, तथा स्वयं अज्ञानी होते हुए भी अपने को बहुत श्रेष्ठ पण्डित मानते हैं।[13] क्या तुम्हारे शासनकाल में स्त्रियाँ सुरक्षित और सन्तुष्ट हैं ? उनके चरित्र की रक्षा होती है ? तुम उनपर अधिक विश्वास तो नहीं करते हो ? क्या तुम उनसे गुप्त (राजकीय) वार्ता तो नहीं बता देते हो।[14]
जो राजा प्रजा में समाविष्ट रहता है तथा जो प्रजा के मध्य कभी जाता ही नहीं है वह राजा अवश्य ही नष्ट हो जाता है। अतः राजा को सदैव यह ध्यान रखना चाहिए कि प्रजा के मध्य उसकी उपस्थित अधिक या कम नहीं होनी चाहिए। इस विषय को स्पष्ट करते हुए राम ने भरत से पूछा–
तुम्हारे शासनकाल में कर्मों में रत सभी नगरवासी जन निःशंक होकर तुम्हारे पास तो नहीं आ जाते ? अथवा वे अधिक भयभीत होकर तुमसे दूर तो नहीं भागते हैं ? क्योंकि कर्मचारियों के विषय में सम्पर्क की मध्यम स्थिति ही कल्याणकारी होती है।[15]
क्या तुम्हारे सभी दुर्ग (किले) धन–धन्य और अस्त्रों–शस्त्रों से सम्पन्न हैं ? तथा जल, यन्त्र (मशीन) और शिल्पियों (अभियन्ताओं) तथा धनुर्धर सैनिकों से सम्पन्न हैं ?[16] हे राघव ! क्या तुम्हारे पास व्यय से अधिक आय होती है ? तुम्हारे खजाने का धन अनाधिकारी जनों के पास तो नहीं चला जाता है ?[17]
(तुम्हारे शासनकाल में) कभी किसी श्रेष्ठ, शुद्धह्रदय वाले पुरुष पर दोष लगाने के कारण शास्त्रज्ञान में निपुण जनों के द्वारा उसके विषय में विना विचार किये ही उसे दण्डित तो नहीं किया जाता है।[18] हे भरत ! यदि धनी और निर्धन के बीच में किसी प्रकार का विवाद चल रहा हो और वह राज्य के न्यायालय में न्याय के लिए आया हो तो तुम्हारे राज्य के मन्त्री धन की लोलुपता को छोड़कर उस विषय पर गम्भीरता से विचार तो करते हैं न ?
राजकार्य किसी भी एक व्यक्ति का कार्य नहीं है। जब कोई भी व्यक्ति दम्भ में आकर समूचे राज्य का अधिकारी स्वयं को मान बैठता है तब वह अकेले ही उसके विषय में निर्णय करने लगता है। उत्तम विचारों से युक्त मन्त्रियों के बिना स्वयं का किया हुआ निर्णय आवश्यक नहीं िकवह उत्तम ही हो। अतः उसके विषय में राम ने भरत से कहा–
राजकार्यों में अकेले हीं चिन्तन करना, मूर्खों की मन्त्रणा लेना, निश्चित किये हुए कार्यों को समय पर प्रारम्भ न करना, गोपनीय मन्त्रणा को सुरक्षित न रखपाना। (राजनीति में ये पाँच दोष बताये गये हैं)[19] मांगलिक कार्यों का अनुष्ठान न करना, सभी शत्रुओ पर एक साथ ही आक्रमण कर देना आदि जो राजा के चौदह दोष बताये गये हैं, तुम उनका परित्याग तो करते हो न ?[20]
श्रीराम का कथन यह इंगित करता है कि राजा कोई भी हो उसमें उपरोक्त गुणों का समावेश होना आवश्यक है। तभी वह प्रजा का पालन कर सकने में समर्थ भी हो सकता है। श्रीराम ने केवल अपनी जिज्ञासा को यहीं शान्त नहीं होने दिया उन्होंने भरत से पुनः प्रश्न किया कि–
हे राघव ! दशवर्ग, पंचवर्ग, चतुर्वर्ग, सप्तवर्ग, अष्टवर्ग, त्रिवर्ग, त्रिविद्या आदि विद्याओं को तुम तत्व से जानते हो न ?[21]
बुद्धि के द्वारा इन्द्रियों में विजय प्राप्त करना, छः गुण, दैवी और मानुषी बाधाएँ राजा के नीतिपरक कार्य विंशतिवर्ग और प्रकृति मण्डल आदि (राजा के गुण माने गये हैं)[22] यात्रा (तीर्थ यात्रा, आक्रमण, लोकनिरीक्षण आदि) दण्ड विधान (व्यूह रचना) दो गुना लाभ देनेंवाली संधि और विग्रह इन सबमें तुम यथार्थरूप से ध्यान तो देते हो न ?[23]
हे विद्वान् भरत ! क्या तुम नीतिशास्त्र के अनुसार तीन अथवा चार मन्त्रियों के साथ मिलकर अथवा अकेले–अकेले मन्त्रणा करते हो ?[24]
उपरोक्त प्रश्नों के अनन्तर राम ने अन्त में अयोध्या के वर्तमान नरेश भरत से कहा कि जो राजा इस प्रकार धर्मपूर्वक दण्ड को धारण कर प्रजा का पालन करता है, वह सम्पूर्ण पृथ्वी में राज्यसुख को भोगता हुआ अन्त में शरीर त्यागकर स्वर्गलोक को प्राप्त करता है।[25]
निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि वाल्मीकिरामायण कि ये राजनैतिक शिक्षायें जिन्हें डा. गौतम द्वारा संकलित कर श्रीमद्रामगीता नाम दिया गया है अत्यन्त ही प्रासंगिक हैं। उनका राजनैतिक समाज में विशेष समादर दिये जाने की आवश्यकता है। तभी हमारा राष्ट्र भौतिक सुख–सुविधाओं के साथ उन्नति करता हुआ मानवीय नैतिक मूल्यों का धनी होकर विश्वगुरु बन सकता है।

सन्दर्भ

1. कच्चिदात्मसमाः शूराः श्रुतवन्तो जितेन्द्रियाः। कुलीनाश्चेंगितज्ञाश्च कृतास्ते तात मन्त्रिणः।। श्रीमद्रामगीता अ. 8 श्लोक 15।।
2. मन्त्रो विजयमूलो हि राज्ञां भवति राघव। सुसंवृतो मन्त्रिधुरैरमात्यैः शास्त्रकोविदैः।। उपर्युक्तानुसार अ. 8 श्लोक 16।।
3. कच्चिन्मन्त्रयसे नैकः कच्चिन्न बहुभिः सह। कच्चित् ते मन्त्रितो मन्त्रो राष्ट्रं न परिधावति।। उपर्युक्तानुसार अ. 8 श्लोक 18।।
4. कच्चिन्नु सुकृतान्नेव कृतरूपाणि वा पुनः। विदुस्ते सर्वकार्याणि न कर्तव्यानि पार्थिवाः।। उपर्युक्तानुसार अ. 8 श्लोक 20।।

5. कच्चिन्न तर्कैर्युक्त्या वा ये चाप्यपरिकीर्तिताः। त्वया वा तव वामात्यैर्बुध्यते तात मन्त्रितम्।। उपर्युक्तानुसार अ. 8 श्लोक 21।।
6. कच्चित् सहस्रैर्मूर्खाणामेकमिच्छामि पण्डितम्। पण्डितो ह्यर्थकृच्छ्रेषु कुर्यान्निःश्रेयसं महत्।। उपर्युक्तानुसार अ. 8 श्लोक 22।।
7. एकोऽप्यमात्यो मेधावी शूरो दक्षो विचक्षणः। राजानं राजपुत्रं वा प्रापयेन्महतीं श्रियम्।। उपर्युक्तानुसार अ. 8 श्लोक 24।।
8. अमात्यानपधातीतान् पितृपैतामहान्शुचीन्। श्रेयष्ठाच्छ्रेष्ठेषु कच्चित् त्वं नियोजयसि कर्मसु।। उपर्युक्तानुसार अ. 8 श्लोक 26।।
9. कच्चिद् धृष्टश्च शूरश्च धृतिमान् मतिमान्छुचिः। कुलीनश्चानुरक्तश्च दक्षः सेनापतिः कृतः।। उपर्युक्तानुसार अ. 8 श्लोक 30।।
10. बलवान्तश्च कच्चित् ते मुख्या युद्धविशारदाः। दृष्टापदाना विक्रान्तास्त्वया सत्कृत्य मानिनाः।। उपर्युक्तानुसार अ. 8 श्लोक 31।।
11. कच्चिदष्टादशान्येषु स्वपक्षे दश पंच च। त्रिभिस्त्रिभिरविज्ञातैर्वेत्सि तीर्थानि चारकैः।। उपर्युक्तानुसार अ. 8 श्लोक 36।।
12. कच्चिद् व्यपास्तान् प्रतियातांश्च सर्वदा। दुर्बलानवज्ञाय वर्तसे रिपुसूदन।। उपर्युक्तानुसार अ. 8 श्लोक 37।।
13. कच्चिन्न लोकायतिकान् ब्राह्मणांस्तात सेवसे। अनर्थ कुशला ह्येते बालाः पण्डितमानिनः।। उपर्युक्तानुसार अ. 8 श्लोक 38।।
14. कच्चित् स्त्रियः सान्त्वयसे कच्चित् तास्ते सुरक्षिताः। कच्चित् स्त्रियः सान्त्वयसे कच्चित् गुह्यं न भाषसे।। उपर्युक्तानुसार अ. 8 श्लोक 49।।
15. कच्चिन्न सर्वे कर्मान्ताः प्रस्यक्षास्तेऽविशंकया। सर्वे वा पुनरुत्सृष्टा मध्यमेवान्न कारणम्।। उपर्युक्तानुसार अ. 8 श्लोक 52।।
16. कच्चिद् दुर्गाणि सर्वाणि धनधन्यायुधोदकैः। यन्त्रैश्च प्रतिपूर्णानि तथा शिल्पधनुर्धरैः।। उपर्युक्तानुसार अ. 8 श्लोक 53।।
17. आयस्ते विपुलः कश्चित् कच्चिदल्पतरोव्ययः। अपात्रेषु न ते कच्चित् कोषो गच्छति राघव।। 54।। उपर्युक्तानुसार अ. 8 श्लोक
18. कच्चिदार्योऽपि शुद्धात्मा क्षारितश्चापकर्मणा। अदृष्टः शास्त्रकुशलैर्न लोभाद् बध्यते शुचिः।। उपर्युक्तानुसार अ. 8 श्लोक 56।।
19. एक चिन्तनमर्थानामानर्थज्ञैश्च मन्त्रणम्। निश्चितानामानारम्भं मन्त्रस्या परिरक्षणम्।। उपर्युक्तानुसार अ. 8 श्लोक 66।।
20. मंगलाद्य प्रयोगं च प्रत्युत्थानं च सर्वतः। कश्चित्त्वं वर्जस्येतान् राजदोषांश्चतुर्दश।। उपर्युक्तानुसार अ. 8 श्लोक 67।।
21. दशपंच चतुर्वर्गान् सप्तवर्गं च तत्वतः। अष्टवर्गं त्रिवर्गं च विद्यास्तिस्त्रश्च राघव।। उपर्युक्तानुसार अ. 8 श्लोक 68।।
22. इन्द्रियाणां जयं बुध्वा शांगुण्यं दैवमानुषम्। कृत्यं विंशति वर्गं च तथा प्रकृति मंडलम्।। उपर्युक्तानुसार अ. 8 श्लोक 69।।
23. यात्रा दण्ड विधानं च द्वियोनि सन्धि विग्रहौ। कच्चिदेतान् महाप्राज्ञ यथावदन मन्यसे।। उपर्युक्तानुसार अ. 8 श्लोक 70।।
24. मन्त्रिभिस्त्वं यथोदिष्टं चतुर्भिस्त्रिभिरैव वा। कच्चिद् समस्तैर्व्यास्तैश्च मन्त्रं मन्त्रयसे बुध।। उपर्युक्तानुसार अ. 8 श्लोक 71।।
25. राजा तु धर्मेण हि पालयित्वा, महीपतिर्दण्डधरः प्रजानां ।अवाप्य कृतस्नान्वसुधां यथावदितश्च्युतः सर्गमुपैति विद्वान्।। उपर्युक्तानुसार अ. 8 श्लोक 76।।